# पशुओं में डेगनाला रोग

डा० पल्लव शेखर [1], डा० रनवीर कुमार सिन्हा [1], डा० सोनम भट्ट [1], डा० विवेक कुमार सिंह [2], डा० अनिल कुमार [2],
[1]सहायक प्राध्यापक, पशु चिकित्सा औषधि विभाग
[2]सहायक प्राध्यापक, पशु चिकित्सा क्लिनिकल कॉम्पलेक्स (भी0सी0सी0)
बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना

## परिचयः

पशुओं में डेगनाला रोग मुख्यतः गाय और भैंस जाति में पाया जाने वाला एक घातक रोग है। इसे पुँछकटवा रोग से भी जाना जाता है। यह रोग प्रायः वर्षा ऋतु के अंत तथा ठंड के मौसम में अधिक पाया जाता है। इस रोग से ग्रसित पशु के आश्रित अंग के हिस्से में नेक्रोसिस और गैग्रीन बनना इस रोग की प्रमुख पहचान है। यह बीमारी भारत के चावल, उगाने वाले राज्यों जैसे– बिहार, गुजरात, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, पंजाब और पश्चिम बंगाल, जैसे क्षेत्रों में मौजूद है। इस बीमारी का नाम डेग नदी के नाम पर पड़ा है जो अभी पाकिस्तान में है। भारत उपमाहद्वीप में यह बीमारी 1930 ई० से होने की सूचना है।

## कारणः

डेगनाला बीमारी एक फफूंद (फंगस) से पैदा होने वाला रोग है। ऐसा माना जाता है कि इस बीमारी का कारण फफूंद फ्यूसैरियम (Fusarium) मागकोटॉक्सिकोसिस युक्त दूषित चावल के भूसे (Paddy straw) के अंतग्रर्हण के कारण होती है। अधिक नमी युक्त पुआल या भूसा खिलाने से यह रोग आम तौर पर जानवरों में पाया जाता है। कुछ वैज्ञानिकों का यह मत है कि यह बीमारी सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी के वजह से होता है।

बरसात के महीनों के दौरान आर्द्रता और तापमान युक्त स्थिति के तहत, सैप्रोफाइटिक कवक खुले मैदान में रखे चावल के भूसे पर कई काले धब्बों के रूप में विकसित होता है। जब हरे चारे की कमी के कारण सर्दियों में इस संक्रमित चावल के भूसे को बड़ी मात्रा में खिलाया जाता है तो चावल के भूसे में पैदा हुए भाग के टॉक्सिन के कारण डेगनाला बीमारी पैदा होती है।

## लक्षणः

1. भूख में कमी, दूध उत्पादन में कमी, चलने में असमर्थता, रूखापन और खुरदरा बाल इस बीमारी के होने का प्राथमिक लक्षण है।
2. यह बीमारी सर्दियों के महीनों (नवंबर से फरवरी) में अधिक प्रचलित है।
3. इस बीमारी में सर्वप्रथम शरीर के आश्रित भाग का गलना तथा बाद में अवसाद (गैग्रीन) को होना प्रमुख है।
4. पशु के पूंछ, कानों के बाल का झड़ना तथा खुरों का झड़ना एवं शरीर के बेसल छोरों का गलना लगभग हर ग्रसित पशुओं में पाया जाता है।
5. जानवर कमजोर और क्षीण हो जाता हैं बल्कि समय के साथ कमोबेश अपंग भी हो जाता है।

चित्र सं० – 01 खूर का गलना

चित्र सं० – 02 शरीर का गलना

चित्र सं० – 03 पुँछ का कटना

## निदान :

इतिहास और नैदानिक निष्कर्ष इस बीमारी के निदान के लिए पर्याप्त है।

## रोकथाम :

- रोग के कुछ लक्षण दिखने पर तुरंत पशु चिकित्सक से सम्पर्क करना चाहिए।
- पशुशाला की नियमित साफ सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- पशु के खान पान पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- प्रोटीन तथा विटामिन यूक्त आहार देते रहना चाहिए।
- इस बीमारी का इलाज के लिए 2 प्रतिशत नाइट्रोग्लिसरीन मरहम के सामयिक अनुप्रयोग के साथ पेंटा सल्फेट मिश्रण को मौखिक रूप से खिलाने से लगभग इलाज हो जाता है।
- पेंटा सल्फेट मिश्रण (Ferrous sulphate 166 gm, Copper sulphate 24 gm, zinc sulphate, 75 gm, cobalt sulphate, 5 gm and magnesium sulphate 100) @ 30gm प्रति पशु लगभग 20 दिनों तक खिलाना चाहिए।

- संक्रमण के रोकथाम के लिए Enrofloxacin या oxytetracycline एन्टीबायेटिक का प्रयोग करना चाहिए।
- दर्द को कम करने के लिए Meloxicam या Tolfenamic acid नामक दवा का प्रयोग करना चाहिए।
- फफूंदी नासक के रूप में KI या NaI नामक नमक का भी प्रयोग किया जा सकता है।
- घांवों को भरने के लिए शरीर के संक्रमित भाग को नीम के पत्ते को पानी में उबालकर उसी पानी से घाव को साफ करना चाहिए।
- पशुओं को फफूंदी लगा हुआ चारा दाना एवं भूसा नहीं खिलाना चाहिए।
- पुआल को पानी से धोकर खिलाना चाहिए।
- पशुओं को नियमित रूप से 50 ग्राम मिनरल मिक्सचर खिलाना चाहिए।
- गोशालाओं में नियमित रूप से फिनाईल एवं चूने के पानी का छिड़काव करना चाहिए।

**नोटः– कोई भी ईलाज पशुचिकित्सक के परामर्श से करना चाहिए।**